नलिनी मालानी : कला के संदर्भ में

*** डॉ. मीनाक्षी हुड्डा**
प्रोफेसर, दृश्य कला विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय,
रोहतक, हरियाणा

**** अनामिका चौरेड़**
शोधार्थी, दृश्य कला विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय,
रोहतक, हरियाणा

NALINI MALANI

भारत में युवा कलाकार समकालीन कला के क्षेत्र में अपनी नई और अलग–अलग शैलियों के कारण उभर कर सामने आ रहे हैं। आज की कला में पेन्टिंग के अलावा इन्स्टॉलेशन, वीडियो इन्स्टॉलेशन, मिक्स मीडिया के माध्यम से कलाकार अपने विचारों को व्यक्त करता है। इन कलाकारों में वेद नायर, विवान सुन्दरम, तेजल शाह, नवजोत अल्ताफ, नलिनी मालानी, गोगी सरोजपाल आदिहैं। इन कलाकारों के अलावा और भी कई ऐसे कलाकार हैं जो इन सभी माध्यमों के द्वारा अपनी अभिव्यक्ति कर रहे हैं। नलिनी मालानी इन सभी कलाकारों में से एक है। इन्होंने चित्रकारी के साथ–साथ वीडियो इन्स्टॉलेशन में अपना हाथ आजमाया है।

नलिनी मालानी का जन्म कराची (पाकिस्तान) में 19 फरवरी 1946 में हुआ। भारत पाकिस्तान के बंटवारे के समय वह एक साल की थीं और 1947 ई. में अपनी माता के साथ भारत में आकर बस गईं। यहाँ कलकत्ता में उन्होंने अपना आशियाना बनाया।[1] 1969 में उन्होंने कला का अध्ययन सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से किया और कला से स्नातक की डिग्री प्राप्त की।[2] इसके बाद 1970–72 में फ्रैंच सरकार की छात्रवृत्ति के तहत पेरिस में कला व ग्राफिक का अध्ययन किया। 1984–89 में भारत सरकार की तरफ से उन्हें कला की छात्रवृत्ति मिली।[3] नलिनी मालानी 1960 के दशक से चित्रकला, मिक्स मीडिया में

कार्य कर रही हैं। उसके बाद उन्होंने वीडियो इन्स्टॉलेशन में हाथ आजमाया और विश्वस्तर पर ख्याती प्राप्त की। नलिनी अपने राजनीतिक विशयों को लेकर जानी जाती है।

इसके अलावा प्राचीन ग्रीक, हिन्दु पौराणिक, यूरोप का साहित्य और नाटक इनके विशय होते हैं और इनसे वो विशेषतौर से प्रभावित भी थी। एक आदमी का सार्वभौमिक सत्य क्या होता है वह उन्होंने हमेशा अपने चित्रों में दिखाने का प्रयास किया है।[4] नलिनी ने एक चित्रकार के रूप में अपना कार्य करना शुरू किया था और कुछ समय के बाद उन्हें ये अहसास होने लगा कि उनको अपनी रचनात्मक इच्छा को और आगे बढ़ाना चाहिए। अतः उन्होंने वीडियो इन्स्टॉलेशन व साउण्ड इन्स्टॉलेशन में हाथ आजमाया और अपनी पहली इन्स्टॉलेशन 1991 ई. में बनाई। जिसका नाम था एलीवे लोहार चाल।[5]

नलिनी ने अपनी जिंदगी के कई साल मुम्बई में बिताए और अपने छात्राकाल में अपना स्टूडियो भूलाभाई मेमोरियल इन्स्टीट्यूट, मुम्बई में खोला और इसका प्रभाव उनके चित्रों पर भी पड़ा। उन्होंने मुम्बई शहर से प्रभावित होकर एक श्रृंखला तैयार की। उन्होंने बहुत से चित्र बनाए। 'Splitting the Other' नामक चित्र उनका काफी प्रसिद्ध चित्र है जो कि 2007 में चित्रित किया गया था। यह चित्र 14 पैनलों में बना हुआ था। यह चित्र 'रिश्तों में आक्रोश' विषय पर आधारित है। इसके 6 पैनल में दो फरिशते एक दानव के दिमाग पर खडे हैं और इन्हें आकाश में चित्रित किया गया है। यह हिस्सा एक तांत्रिक समूह की तरह लग रहा है। इसके नीचे संसार को चित्रित किया गया है। इसमें सभी आकृतियों को एक प्रतीक के तौर पर प्रदर्शित किया है। चित्र को एक्रेलिक रंगों से अनुरंजित किया गया है। चित्र में बहुत ही खूबसूरती के साथ चमकीले रंगों का प्रयोग किया गया है। लाल, गुलाबी, पीला, नारंगी, नीला हर तरह के रंगों से यह चित्र सराबोर है।

SPLITTING THE OTHERS (2007)

1970 के उनके शुरूआती काम यर्थाथवादी है और पारिवारिक सम्बन्धों व औरतों के ऊपर है। नलिनी के अनुसार वे कह रही है कि 'एक औरत को व्यापक परिवेश में चित्रित करना पड़ा और उन तमाम बातों पर मैंने निजी तौर पर गौर किया।' उनकी आकृतियाँ अन्तर्मुखी, सन्नाटे वाली व खामोशी से भरी हुई होती है। उनके चित्रों में अजीब सा सन्नाटा पसरा हुआ होता है और आम आदमी उससे खुद को जोड़ कर देखता है। वे अपने चित्रों में धूसर व गहरे रंगों का प्रयोग करती है। उन्होंने 1982 में तेल रंगों को छोड़कर जलरंगों को पूरी तरह अपना लिया था।[6] उन्होंने जलरंगों का प्रयोग इन्स्टॉलेशन में भी किया।

1980 में उनके ये विषय बदल कर भूमण्डलीकरण, राष्ट्रीयता, तृतीय विश्व युद्ध आदि हो गए थे और ये विषय इनके चित्र Old arguments about indigenism, monsters and Angels, flux of experienceमें दिखाई देते हैं।[7] 1990–91 में उन्होंने एक श्रृंखला तैयार की जिसका नाम था Hieroglyphs.इसमें मुम्बई की एकलोहार चाल की कार्यविधि को

चित्रित किया। लोहार चाल वाली मार्केट बिजली के यंत्र, उपकरण की थी। उनकी तरफ नलिनी ने कभी ध्यान नहीं दिया मगर फिर भी वह उनकी जिंदगी को चित्रित करना चाहती थी। जो एक चित्र बनाने का पारम्परिक ढंग होता है वह यहां पर इस्तेमाल नहीं हो सकता था। अतः वह वहां के मजदूरों और निवासियों को ध्यान से देखती अैर अपनी याद से उनके रेखाचित्र बनाती। 20 साल तक उन्होंने इस पर कार्य किया और एक श्रृंखला तैयार की Hieroglyphs of Lohar Chawl.

2001 में उन्होंने Transgressions नामक इन्स्टॉलेशन बनाया। इसमें उन्होंने Mylar नामक पॉलिएस्टर की परत से चार Cylinder बनाए। उनमें अन्दर की तरफ जानवर, देवता, शैतान को चित्रित किया गया। इसमें उन्होंने 18वीं भाती की चाईनीज़ विधीको ध्यान में रखकर कार्य किया। इसके ऊपर उन्होंने पेन्ट को लगाया। इस इन्स्टॉलेशन में ये Cylinder घूमते हैं, इन पर प्रकाश पड़ता है और इनके चित्रों की परछाई दीवार पर पड़ती है, पृश्ठभूमि में आवाज भी आती है, वीडियो रिकॉर्डिंग भी है।[9]

TRANSGRESSION(2001)

जैसा कि हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं कि ग्रीक और हिन्दू पौराणिक कथाओं से वो पूरी तरह से प्रभावित थी। ग्रीक पौराणिक कथा की एक पात्र मीडिया को उसे पति ने धोखा दे दिया था और

मीडिया अपने अपने बच्चे को मार दिया था। इस बात से दुःख में सदैव रहने वाली मीडिया नलिनी के प्रमुख विशयों में से एक विषय बनी रही।

2006 में नलिनी ने एक चित्र बनाया Exposing the Source इसमें उन्होंने खुद को चित्रित किया और इन्सान के भावों जैसे कि प्यार, नफरत, डर, वासना, गुस्सा, दर्द, आनन्द को प्रदर्शित किया। इस चित्र में उन्होंने अपने कलाकार के दो दशक को चित्रित किया है।इसमें एक महिला को तिरछा बनाया गया है जो अपने बच्चे को गोद में उठाने के लिए आगे बढ़ रही है। चित्र के ऊपर वाले कोने में दो आकृतियां बनाई गई हैं। जो शहनाई बजा रही है और चित्र के निचले भाग में दो अन्य आकृतियां हैं जो खुशी जाहिर कर रही है और मंजीरे बजा कर नाच रही हैं। पृश्ठभूमि में पेड़ पौधे बना रखे हैं। जहां बात की जाए रंगों की तो हर तरह के रंगों को लगाया है। नीला, पीला, नारंगी, बैंगनी, गुलाबी, काला, सफेद इन सभी रंगों को संतुलित करके लगाया गया है।

EXPOSING THE SOURCE (2006)

उन्होंने साधारण आम जनजीवन पर भी कार्य किया। "Women Friends'इसी विषय पर बनाया गया था जो कि 1983 में बना। इस चित्र में तीन महिलाओं को बैठे हुए दिखाया है। एक महिला बैठी हुई चित्रित की है, दूसरी महिला उसके पीछे लेटी हुई है और तीसरी महिला खड़ी हुई है, वह खड़े होकर एक कपड़े को सही कर रही है। तीनों की भाव भंगीमाएं इस तरह से बनाई गई है मानो वह अपनी बातों में मग्न हों और दुनिया से कोई लेना देना ना हो। चित्र में बहुत चमकीले रंगों का प्रयोग किया गया है। नारंगी, लाल, हरा, नीला रंग का प्रयोग संतुलित ढंग से किया है। इस चित्र के अलावा 1983 में "Play Ground'नामक चित्र भी बनाया। यह चित्र कागज परबनाया गयाथा। हल्के हरे, नीले रंग से खेलते हुए बच्चों को कहीं पर कुत्तों के साथ बैठे चित्रित किया है, कहीं पर दो बच्चे खेलते दिखाए गए हैं। आकृतियों में एक धुंधलापन है और छाया–प्रकाश का अभाव है। आकृतियों के नीचे भी छाया–प्रकाश नहीं दिखाया गया है जिसके कारण आकृतियां हवा में उड़ती हुई प्रतीत हो रही है। चित्र में परिपेक्ष्य का पूरा ध्यान रखा गया है।

PLAY GROUND (1983)

नलिनी द्वारा बनाया गया"Street Performer'नामक चित्र भी दैनिक जन–जीवन से प्रेरित है। इस चित्र में एक नट परिवार के सदस्यों को सड़क पर खेल करते हुए दिखाया गया है। चित्र के बीच में एक

महिला को कमर के बल झुकते हुए चित्रित किया है, उसके ऊपर एक आदमी बैठा है और उसके ऊपर

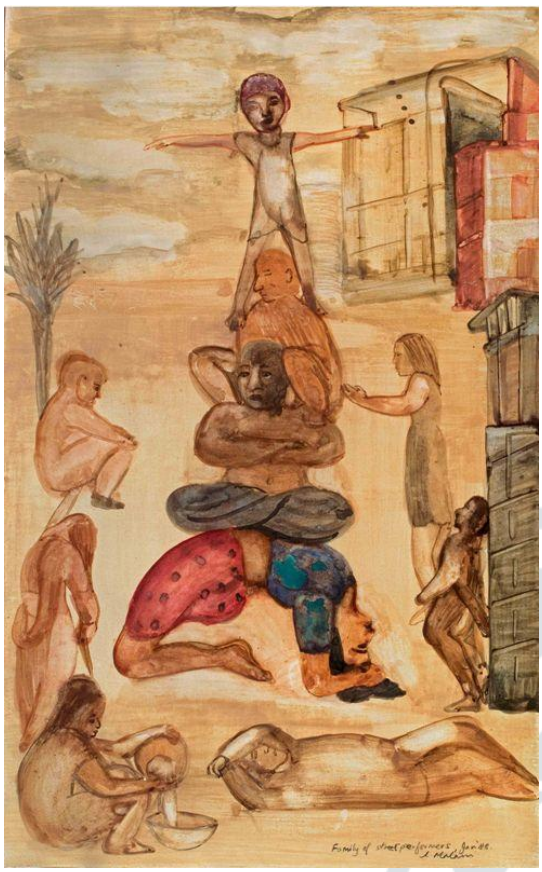

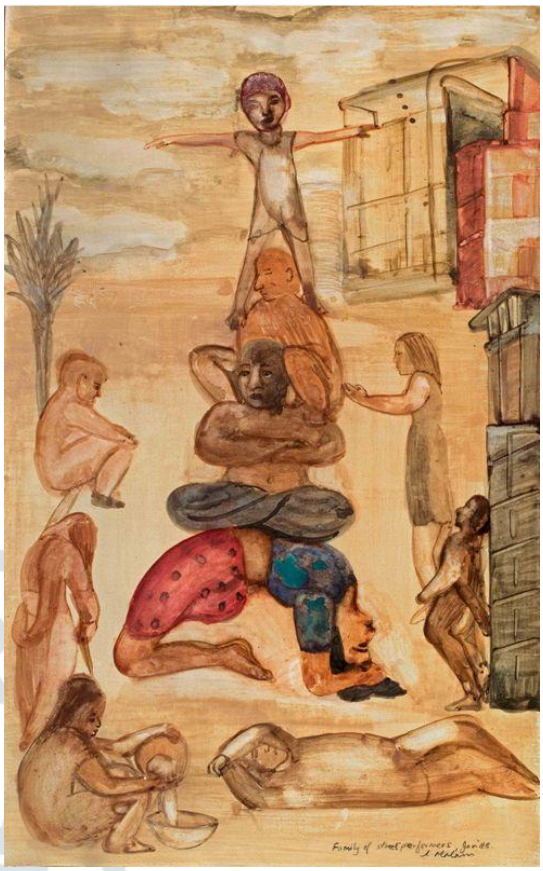

एक बच्चा खड़ा हुआ है। आकृतियों को बहुत ही संतुलित तौर पर बनाया गया है। इन आकृतियों केदोनों तरफ दो–दो आकृतियां बनाई गई हैं, वो भी खेल दिखा रहे हैं। चित्र के अग्रभाग में एक आदमी को लेटे हुए और एक महिला को बैठे हुए चित्रित किया है। पृश्ठभूमि में पेड़, मकान बनाए गए हैं। पीले रंग की प्रधानता साफ तौर पर चित्र में देखी जा सकती है। पीले रंग के कारण चित्र में एकरसता आ गई है। प्रमुख महिला की आकृति के जो वस्त्र हैं लाल, नीले, वह इस एकरसता को समाप्त कर रहे हैं। चित्र में संतुलन व परिपेक्ष्य का विशेष तौर पर ध्यान दिया गया है।

इन सबके अलावा नलिनी ने कई और विषयों पर भी चित्र बनाए। मीडिया, सीता, Alice in Mumbai, Once Upon a time, Twice Upon a time, Blood lines, The city of Desire, Fragments आदि। नलिनी एक मल्टीमीडिया कलाकार है उन्होंने पेंटिंग के अलावा शैडो प्ले, मल्टी प्रोजेक्शन वर्क, प्रतिस्थापन और रंगमंच में भी कार्य किया। उन्होंने खुद को सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में स्थापित किया। उन्होंने बड़ी–बड़ी प्रदर्शनियां लगाई जो भारत, STREET PERFORMER (1988) ऋथ अफ्रीका में लगी।

उनके चित्रों में हम विभिन्नता देख सकते हैं। उनकी आकृतियां खुद में ही समाई हुई अन्तर्मुखी होती है। उनके चित्रों में एक अजीब सा सन्नाटा पसरा हुआ होता है। आकृतियां विभत्स रूप की प्रतीत होती हैं। उनके रंग कहीं बहुत चमकीले दिखते हैं तो कहीं धूसर। वे शहरी जनजीवन पर भी चित्र बनाती हैं। उनके विषय मर्द–औरत, माता–पिता, किशोरी अवस्था, औरत आदि हैं। उनका कहना है – मेरे चित्र में एकमात्र विशय नहीं हो सकता, इसलिए मुझे अपने विचारों को बार–बार वापस लाने के लिए बिम्बों की क्लोनिंग करनी पड़ती है।''[10]

नलिनी के चित्र शैली की विशेषताएं एवं पृष्ठभूमि बहुत ही बारीकी से हमें देखने को मिलती है। उनके कार्या बहुत ही बलशाली होते हैं और विशेषकर वर्णात्मक होते हैं। उनकी शैली किसी भी कलाकार की शैली की नकल नहीं कही जा सकती। उनकी कला उनकी सोच व आकृतियों के बीच की कड़ी मानी जा सकती है। उनकी कला में भविष्य की सोच व कल्पना है और भूतकाल की यादों का जमावड़ा है। भविष्य एंव अतीत के साथ–साथ उनकी कला में वर्तमान में घटित इन्हीं विशेषताओं के कारण नलिनी मालानी एक भारतीय कलाकार के रूप में पूरे विश्व में अपनी पहचान बना चुकी है। उन्होंने दिल्ली में भारतीय महिला चित्रकारों की पहली चित्र प्रदर्शनी लगाई। 2013 में उन्हें Fukuoka Prize मिला और यह पुरस्कार पाने वाली पहली एशियन महिला चित्रकार बनीं। नलिनी मलानी अभी मुम्बई में रहकर अपने कला कार्यों में व्यस्त हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. McEvilley, Thomas-"Locating the female Gaze : Nalini Malani', Irish Museum of Modern Art, 2009, (Page No. 11 to 12)
2. Chawla, Rupika-"Surface and Depth Indian Artists at Work'. First Published in Viking by Penguin Books, India, 1995
3. Retrieved from www.nalinimalani.com/bio.htm on 21 April 2016
4. Seid, Betty- "New Narratives Contemporary Art from India',Chicago cultural Center, Washington Street, Chicago , 2007, (Page No. 115)
5. Malini, Nalini- "The Genesis', Lalit Kala Contemporary 43, 2000, (Page No.- 54).
6. Chawla, Rupika-"Surface and Depth Indian Artists at work', First Published in Viking by Penguin Books, India, 1995 (Page NO. 206).
7. Sinha, Gayatri- "Expression and evocations contemporary women Artists of India',Marg Publications, New Delhi (Page No. - 136).
8. Retrieved. from blogs.wsj.com/indiarealtime/2014/10/10/a-retrosoectuve-of-the-works-of-nalini-malini-who-paints-in-reverse/on 10 May 2016.
9. Ibid.
10. विरंजन राम, आधुनिक भारतीय कला और महिला कलाकार, कला दीर्घा, अक्टूबर 2003, वॉल्यूम 4, नं0 7, उत्कर्ष प्रतिष्ठान वी 95, गोमती नगर, लखनऊ–226010।